B.Ed. 2nd Year
Session – 2018-2020
Subject – School Mangagement and Leadership
Course – 11(E) /Unit – 1(a)
Topic – **विद्यालय-संगठन के सिद्धांत**
(Principles of School-Organisation)

Dr. Amod Kumar Sinha
(Assistant Professor)
Department of Education
A.N. D. College
Shahpur Patory
Samastipur

Lecture No. - 83

Continued from previous lecture....

3. **बाल-केन्द्रित सिद्धांत** - विद्यालय का मूख्य कर्त्तव्य छात्रों का सर्वांगीण विकास करना है। इस दृष्टि से संगठन छात्र-केन्द्रित होना चाहिए। इसके द्वारा बालकों की विभिन्न योग्यताओं, प्रवृत्तियों, शक्तियों, भावनाओं को स्वस्थ दिशा में विकसित किया जा सकेगा। संगठन द्वारा विद्यालय में इस प्रकार का वातावरण उत्पन्न किया जाना चाहिए बालक शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं चारित्रिक कुशलताओं को सरलता पूर्वक प्राप्त कर सकें।

4. **समाज-केन्द्रित सिद्धांत** - संगठन बाल-केन्द्रित होने के साथ-साथ समाज-केन्द्रित भी होना चाहिए। ऐसा इसलिए कि बालक को समाज का एक सक्रिय , सहयोगी एवं कुशल नागरिक बनाना है। संगठन में बालकों की विकास-संबंधी क्रियाओं के आयोजन के साथ-साथ समाज की प्रगति हेतु उचित व्यवस्था का होना भी नितांत आवश्यक है। संगठन द्वारा समाज में गत्यात्मक उद्देश्य को भी अभिव्यक्त किया जाना चाहिए, जिससे समाज भी प्रगति की ओर अग्रसर हो सके। अतः विद्यालय-संगठन बालक की विकासात्मक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए भी समाज के आदर्शों, आकांक्षाओं, मूल्यों, संस्कृति आदि पर आधारित होना चाहिए।

5. **उपलब्ध साधनो के अधिकतम उपयोग का सिद्धांत** - अभीष्ठ शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उपलब्ध साधनों का सर्वोत्तम उपयोग होना चाहिए। इस दृष्टि से संगठन द्वारा विभिन्न मानवीय एवं भौतिक तत्वों में अधिकाधिक सामंजस्य स्थापित किया जाना चाहिए, जिससे उनका सर्वोत्तम उपयोग करके शक्ति,

समय एवं धन का अधिकतम सदुपयोग हो सके। शिक्षको की न्युक्ति तथा विद्यालय में प्रयुक्त होने वाली समस्त सामग्री जैसे - शिक्षण-विधियाँ, पाठ्यक्रम-सहगामी क्रियाएँ, पाठ्य-पुस्तक एवं अन्य साज-सज्जा, जो बालकों तथा समाज की आवश्यकताओं के अनुकूल हों, ध्यान में रखकर निर्धारित की जाएँ।

6. **लोच का सिद्धांत** - मानव-प्रकृति एवं समाज तथा उसकी आवश्यकताएँ परिवर्तनशील हैं। अतः समाज के गत्यात्मक उद्देश्य को भी अभिव्यक्त किया जाना चाहिए, जिससे समाज भावी प्रगति की ओर अग्रसर हो सके। अतः विद्यालय-संगठन को बालक की विकासात्मक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए भी समाज के आदर्शों, आकांक्षाओं, मूल्यों, संस्कृति आदि पर आधारित होना चाहिए।